IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

डा0 अम्बेडकर : भारत विभाजन त्रासदी

Rashmi Gupta

Assistant Professor

S N Sen B.V.P.G

भारत विभाजन एक ऐसी त्रासदी थी जिसने असंख्य जख्मों को जन्म दिया। स्वतंत्रता प्राप्ति के आरंभिक चरण में, राश्ट्रीय आदोलन के विभिन्न नेता भारत विभाजन के पक्ष में नहीं थे परन्तु साम्प्रदायिक संधर्श के लगातार विकराल होते जाने के कारण अंततः सभी विवश हो गये कि विभाजन को स्वीकार कर स्वशासन प्राप्त किया जाये।

विभाजन के अनेक कारण थे परन्तु जो सर्वप्रमुख कारण सभी के द्वारा स्वीकार किया गया वह था, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के द्वारा हिंदू मुस्लिम वैमनस्य को 1857 के स्वाधीनता संग्राम के बाद प्रोत्साहित किया गया परन्तु डा0 अम्बेदकर ने इस समस्या के विवेचन के उपरान्त निश्कर्श निकाला कि सिर्फ सही कारण पर्याप्त नहीं है।

डा0 अम्बेदकर ने 'पाकिस्तान आर या दि पार्टीशन ऑफ इण्ड़िया' 1946 में लिखते हुये कहा कि गॉधीजी ने खिलाफत जैसे आंदोलन का न केवल समर्थन किया अपितु इस आंदोलन का मित्र एवं पथ प्रद"ाक बनने की भी कोि"ा"ा की। मामला तो तुर्की का था। कमाल अता तुर्क स्वयं अपने दे"ा को राश्ट राज्य के रुप में बदलना चाहते थे। सुल्तान खलीफा को बनाये रखने के लिये तुर्को पर जोर डालना, सम्पूर्ण वि"व में मुस्लिम पोगापंथ को बढ़ावा देना है। इस आंदोलन से गॉधी जी को क्या वास्ता होना चाहिये था। लेकिन गॉधी जी की सोच थी कि इस आंदोलन में भारतीय मुसलमानों का साथ देने से हिंदू मुस्लिम एकता के द्वार खुलेगें। डा0 अम्बेदकर की मान्यता थी कि हिंदू समाज को दुर्बल बनाने वाले हजारों साल पुराने सामाजिक गठन ने प्रमुख भूमिका निभाई है। समाज की सतह पर कट्टरवादी हिंदू जमें थे, जिन्होने बहुसंख्यक हिंदू समाज को मानसिक रुप से कुण्ठित बनाये रखा, वही दूसरी तरफ विगत 800–900 वर्शो से हिंदू मुसलमान आपस में संधर्श करते रहे।

डा0 अम्बेदकर का विचार था कि किसी समस्या का समाधान उसकी यथार्थ परिस्थितियों के आधार पर खोजा जाना चाहिये न कि उसके आद''ार्ो या सतही आकलन के आधार पर क्योंकि इससे जहॉ समस्याओं का समाधान तो संभव नहीं होगा बल्कि स्थितियॉ और ज्यादा बिगड़ेगी। हिंदू मुस्लिम एकता की विफलता के कारणों का उल्लेख करते हुये डा0 अम्बेदकर ने कहा कि ''हिंदू मुस्लिम एकता की विफलता का मुख्य कारण

इस अहसास का न होना है कि हिंदुओं और मुसलमानों के बीच जो भिन्नतायें है, वे मात्र भिन्नतायें ही नहीं है और उनके बीच मनमुटाव की भावना सिर्फ मौलिक कारणों से ही नही है। इस विभिन्नता का स्त्रोत ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक दुर्भावना है तथा राजनैतिक दुर्भावना तो मात्र प्रतिबिंब है..... जब तक ये दुर्भावना विद्यमान रहती है तब तक हिंदू और मुसलमान के बीच एकता की अपेक्षा करना अस्वाभाविक है..... ये दोनो धर्म एक दूसरे के प्रतिकूल है और अच्छी सामाजिक व्यवस्था के लिये इनमें जबरन चाहे जो भी सामंजस्य बिठाया गया हो किन्तु आंतरिक सामंजस्य स्थापित नहीं हो पा रहा है इन दोनों के बीच एक प्राकृतिक विरोध की भावना रही है, जिसे भाताब्दियों से खत्म नहीं किया जा सका है। .....

कहा जा सकता है कि हिंदू धर्म लोगों को बांटता है, जबकि इस्लाम धर्म उन्हे मिलाता है, लेकिन यह अर्धसत्य है क्योंकि इस्लाम भी लोगों को उतना ही बांटता है जितना कि हिंदू धर्म। इस्लाम एक बंद निकाय की तरह है, जो मुसलमानों और गैर मुसलमानों के बीच जो भेद करता है वह बिल्कुल भूर्त और स्पश्ट है। इस्लाम का भ्रातभावमानवता का भ्रातृत्व नहीं है मुसलमानों का मुसलमानों से ही भ्रातृत्व है। यह बंधुत्व है। परन्तु इसका लाभ अपने ही निकाय के लोगों तक सीमित है। और जो इस निकाय से आहर है उसके लिये इसमें सिर्फ घृणा व भात्रुता ही है। इस्लाम का दूसरा अवगुण यह है कि यह सामाजिक स्व''ाासन की एक पद्वति है और स्थानीय स्व''ाासन से मेल नहीं खाता क्योंकि मुसलमानों की निश्ठा, जिस दे''ा में वे रहते है, उसके प्रति नहीं होतो बल्कि वह उस धार्मिक वि''वास पर निर्भर करती है, जिसका कि वे एक हिस्सा है।

डा0 अम्बेदकर का मत था कि भाताब्दियों से चली आ रही साम्प्रदायिक समस्या को सिर्फ विधान दृश्टिकोण से सुलझाया नहीं जा सकता है। ब्रिटि''ा औपनिवे''िक भाासन ने भाासन स्थिरता को दृश्टिगत रखते हुये इस साम्प्रदायिक समस्या को और मजबूत आधार प्रदान किया। संभावित जबरन थोपी गयी एकता के विखण्ड़न का खतरा सदैव ही बना रहेगा। प्रत्येक भारतीय संकीर्ण मानसिकता से ग्रस्त है, इसीलिये राश्ट्र की एकता व

अखण्ड़ता के लिये वे उदार दृश्टिकोण का परिचय दें, यह एक कठिन प्र''न है। राश्ट की एकता के लिये संभावित निदान कारगर साबित हों यह एक यक्ष प्र''न है क्योंकि

अल्पसंख्यक समुदाय के प्रतिनिधित्व हेतु गठित दल इस समस्या को उलझाने के लिये निरंतर प्रयासरत रहेगा, ऐसे में कोई भी प्रयास निराधार हो जायेगा।

डा0 जिन्ना ने जब देखा कि महात्मा गॉधी का जनाधार व्यापक है और उस राजनैतिक क्षेत्र में उनके लिये कोई भी संभावना नहीं है तो उन्होने मुसलमानों को अलग राश्ट्र का स्वप्न दिखाया जहॉ उनका भाासन होगा और उन्हे बहुसंख्यक हिंदुओं के अधीन नहीं रहना पडगा। 1940 में मुस्लिम लीग ने लाहौर अधिवे''ान में आत्मनिर्णय और स्व भाासन का जो प्रस्ताव पास किया, वह इस दि''ाा में आगे चलकर निर्णायक साबित हुआ। इस प्रस्ताव ने अल्पसंख्यक समुदाय को आ''वस्त कर दिया कि वे ब्रिटि''ा भाासन पर अपना दबाव बनाकर स्व''ाासन की अपनी परिकल्पना को साकार कर सकते है। डा0 अम्बेदकर ने मुस्लिम राजनीति के विकास का विवेचन करने के उपरान्त यह पाया कि वे क्रम''ाः अपने कदमों को बढ़ा रहे है।

मुस्लिम नेतृत्व किसी ऐसी मजबूत केन्द्रीय व्यवस्था को स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं था जो कि हिंदू बहुसंख्यक समुदाय से निर्मित हो। इसीलिये जब भी हिदू मुस्लिम एकता का प्रयास दोनों तरफ के उदार समुदाय द्वारा किया गया, वहीं दोनों पक्ष के कट्टरपंथी तत्व एक होकर उन प्रयासों को विखण्ड़ित करने में जुट गये इसीलिये मुस्लिम हिदू एकता परवान नहीं चढ़ सकी।

पाकिस्तान बनना या दे''ा का विभाजन अव''यभावी है, क्योंकि दोनों समुदाय आपसी समझदारी या विवेकपूर्ण मानसिकता को दरकिनार कर चुके है। इसीलिये डा0 अम्बेदकर ने पाकिस्तान निर्माण की वकालत करते हुये कहा कि, ''कब ये खतरे खत्म होगे? जब तक हिंदू मुसलमान उक ही संविधान के अन्तर्गत एक ही दे''ा में रहते रहेगे, यह खतरा कायम रहेगा क्योंकि दोनों संप्रदायों पर एक संविधान लागू होने में यह आं''ाका है कि अपने आरम्भ के काल में स्थापित संतुलन के समाप्त होने पर, जो अव''यभावी है। मुसलमानों और हिंदु एक दूसरें को फिर अपने लिये खतरा समझने लगेगें। यदि यही होना है तो स्पश्ट उपचार पाकिस्तान ही है। खतरों के मुख्य कारक को यह समाप्त कर देता है। पाकिस्तान का निर्माण हिंदू और मुसलमान दोनों को ही एक दूसरें की गुलामी और अनाधिकृत आक्रमण की आ''ांका से मुक्त कर देता है।

डा0 अम्बेदकर के मतानुसार, दोनों दे''ाों के संविधान में उनसे सम्बन्धित प्रावधान भाामिल होगे, जिससे सामाजिक महत्व के मामलों को सुलझाया जाना संभव हो पायेगा क्योंकि स्वराज्य के लिये जो संघर्श जारी है उसका लक्ष्य भी सही है। विभाजन के उपरान्त एक अन्य महत्वपर्ण मुद्दा था, वह था जनसंख्या की स्थानान्तरण प्रक्रिया। वह कैसे संभव होगी? तथा किस प्रकार के प्रावधान द्वारा सुनि"चत किया जायेगा कि स्थानान्तरण प्रक्रिया उचित प्रकार से सम्पन्न हो। मुस्लिम बहुसंख्यक प्रदे''ा तो पाकिस्तान में भाामिल हो जायेगें लेकिन मुस्लिम समुदाय सारे भारत में निवासरत् है, इसलिये डा0 अम्बेदकर ने जनसंख्या के आदान–प्रदान पर विचार व्यक्त करते हुये कहा कि, ''हिंदुओं के लिये चितंनीय प्र''न है कि पाकिस्तान न बनने से हिंदुस्तान में सांप्रदायिक समस्या किस हद तक सुलझेगी। यह बात स्वीकार कर लेनी चाहिये कि पाकिस्तान बनने से हिंदुस्तान साप्रंदायिक समस्या से मुक्त नहीं हो जायेगा। सीमाओं का पुर्ननिर्धारण करके पाकिस्तान को एक सजातीय दे''ा बनाया जा सकता है, परन्तु हिंदुस्तान तो एक मिश्रित दे''ा बना ही रहेगा। मुसलमान समूचे हिंदुस्तान में छितरे हुये है – यद्यपि वे मुख्यतः भाहरों और कस्बों में केन्द्रित है। चाहे किसी भी ढंग से सीमाकंन की को"ा''ा की जाये। उसे सजातीय दे''ा नहीं बनाया जा सकता। हिंदुस्तान को सजातीय दे''ा बनाने का एकमात्र तरीका है जनसंख्या की अदला–बदली की व्यवस्था करना। यह अव''य विचार कर लेना चाहिये कि जब तक ऐसा नहीं किया जायेगा, हिंदुस्तान में बहुसंख्यक बनाम अल्पसंख्यक की समस्या और हिंदुस्तान की राजनीति में असंगति पहले की तरह ही रहेगी।

डा0 अम्बेदकर के पाकिस्तान निर्माण संबंधी विचारों को लेकर कटु आलोचना हुई लेकिन अंततोगत्वा उनकी विभाजन संबंधी धारणा सत्य साबित हुई कि यह अव''यंभावी है और इसे टाला नहीं जा सकता। 1946 की अंतरिम सरकार के निर्माण में मुस्लिम लीग और कांग्रेस नेताओं ने साथ मिलकर कार्य किया था इस दौरान कार्य संबंधी अनुभव अत्यंत कअु सिद्ध हुये, जिसके परिणामस्वरुप वे कांग्रेस नेता जो भारत विभाजन के पूर्णतया विरुद्ध थे, वे भी भारत विभाजन के लिये राजी हो गये।

इस प्रकार एक अन्य स्थिति जिसका निर्धारण और व्यवस्था जनसंख्या के स्थानान्तरण में किया जाना था, नीति नियोजन के अभाव में दुव्यर्वस्था, अराजकता व व्यापक नरसंहार में परिणत हुई। मुस्लिमो का पूण रुप से पाकिसतान में स्थानान्तरण नहीं

हुआ जिसके परिणामस्वरुप भारतीय राजनीति, स्वाधीनता प्राप्ति के बाद मुसिलम तुश्टिकरण की राजनीति व मुस्लिम को वोट बंक मानकर विभिन्न दलों की संकीर्ण मानसिकता का ि"ाकार बन गई। समय–समय पर विभिन्न राज्यों में सांप्रदायिक दंगों का जन्म, इस समस्या का एक नया आयाम बनकर सामने आया। सभी समस्याओं का समाधान संभव भी है व वांछित भी। लेकिन संकीर्ण विचारधारायें, उसके निराकरण को उचित नहीं मानती क्योंकि वे उन्ही संकीर्ण मानसिकताओं के संरक्षण में फल–फूल रही है। इसलिये समस्याओं का समाधान उन्हे रास नहीं आता।

सन्दर्भ :–

1. सिंह मोहन, डा0 भीमराव अम्बेदकर, व्यक्तित्व के कुछ पहलू, लोकभारत प्रका"ान, इलाहाबाद 2016 पृ0 109
2. बाबा साहेब अम्बेदकर, सम्पूर्ण वांग्मय, खण्ड़–15, पृ0 336, 337
3. बाबा साहेब अम्बेदकर, सम्पूर्ण वांग्मय, खण्ड़–15, पृ0 242, 43
4. बाबा साहेब अम्बेदकर, सम्पूर्ण वांग्मय, खण्ड़–15, पृ0 102, 103